



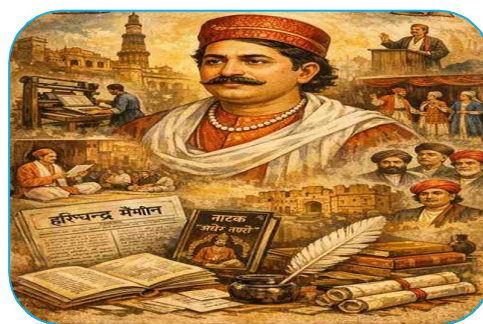
भारतेन्दु युगीन नाटकों में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. सोनल दुबे

व्याख्याता

शासकीय दृष्टि एवं श्रवणबाधितार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश).

भारतेन्दु युग की शुरुआत होने से पहले भारत में आजादी की पहली तात्कालिक असफल लड़ाई लड़ी जा चुकी थी। 1857 में अंग्रेजी शासकों से निर्णायक लड़ाई लड़ने के लिए जिन कारकों की जरूरत थी, वे कारक पूरी तरह भारतीय समाज में मौजूद नहीं थे। राष्ट्रवाद की शुरुआत बंधुत्व, समानता और स्वाधीनता के अहसास से होता है। भारतेन्दु युगीन नाटककारों ने इन्हीं तत्वों को गहराई से उकेरने की कोशिश की। भारतीय राष्ट्रवाद में सामंतवाद जो विकृति पैदा कर रहा था वह कुछ अंशों में आज भी मौजूद है। यह विकृतियों को नाटककारों ने अपने नाटकों के द्वारा समाज को सफल एवं मजबूत बनाने में किया।



भारतेन्दु युग को सन् 1857 ई० से 1900 ई० तक स्वीकार किया गया है। इस दौर के मुख्य नाटककारों में लाला श्रीनिवास दास, राधाकृष्ण दास, किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र एवं जी० पी० श्री वास्तव का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इन साहित्यकारों ने साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से देशवासियों को तत्कालीन परिस्थितियों का बोध कराया और उनमें राष्ट्रीय चेतना मिली।

“नाटक से बढ़कर ऐसा दूसरा उपाय नहीं था जिससे सर्वसाधारण की सामाजिक दशा का वर्तमान चित्र दिखाकर उसका पूरा-सुधार किया जाए।” इसी कारण से भारतेन्दु युग में नाटक अधिक लिखे गये। साथ ही नाटकों में जनभाषा और कविता का समावेश किया। भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने महसूस किया कि कविता केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित रह गयी इसलिए कविता के माध्यम से जिस संदेशों का संचार न हो सका उसकी पूर्ति नाटक के द्वारा की गयी डॉ० लक्ष्मी सागर वाष्णीय ने लिखा है- “बीसवीं शताब्दी साहित्य के हिंदी जीवन में जो स्थान उपन्यास साहित्य का है, या जो पूर्व आधुनिक कालों में महाकाव्य का था वही स्थान भारतेन्दु युग में नाट्य साहित्य का था। उसमें जीवन के नवीन सत्यों की उपलब्धि और आत्म संस्कार का मांगलिक एवं अभिनन्दनीय प्रयास है।”²

इस काल के नाटकों में राष्ट्रीयता की धारा का संचार हुआ क्योंकि नाटक ही ऐसा माध्यम था जिसके द्वारा आम जनमानस के हृदय में कम समय में राष्ट्रीय चेतना की भावना जगाई जा सकती थी। भारतेन्दु नवजागरण के अग्रदूत बनकर आये। स्पष्ट है कि इस युग के अधिकतर नाटकों में राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न तत्व समविष्ट हैं-

अंबिका दत्त व्यास ने अपने नाटक 'गो संकट' की भूमिका में सूत्रधार का कथन है- "सूत्रधार (समाज की ओर देखकर) आज तो समाज में बहुत उत्तम जन देशोन्नति में तत्पर और शुद्ध हिंदी के आग्रही लोग जुड़े हैं- निःसंदेह वे लोग कोई नाटक लीला देखना चाहते हैं।"³ सूत्रधार के माध्यम से अंबिकादत्त व्यास ने तात्कालीन नाटकों के उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला।

पं. प्रताप नारायण मिश्र ने अपने नाटकों में भारत के गौरवपूर्ण अतीत को दोहराया।

भरत के भुज बल जग रक्षित।

भारत विद्यालय जग शिक्षित

भारत तण जगत विस्तारो

भारत भय कंपन संसार।⁴

देश प्रेम में आकुल, नव निर्माण के उत्साह से प्रेरित तथा जन्मभूमि की सेवा की अदम्य लालसा आदि ने राष्ट्रीय जागरण की भूमिका प्रस्तुत कर दी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उनके युग के नाटककारों ने अपने चारों ओर के जीवन तथा भारतीय पुराणों तथा इतिहास से संवेदना स्वीकार की और जीवन को पुष्ट कर जन-मन की वीणा से नवीन स्वर झंकृत करने का सराहनीय प्रयास किया।"

भारतेन्दु कालीन नाटककार एक नवीन और समस्त दृष्टिकोण लेकर देश और जाति के विशाल प्रांगण में प्रवीण हुये। इनके प्रवेश के साथ इस युग में नई चेतना का सूत्रपात और नई दिशा तथा पश्चिमी विचारों का प्रकाश तेजी से फैलना प्रारंभ हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उनके साथी नाटककारों ने अपने चारों ओर के जीवन तथा भारतीय जनता के जीवन को पुष्ट करने का प्रयास किया। इन नाटककारों ने राजहित और राष्ट्रकल्याण की तीव्र भावना प्रकट की परिणाम स्वरूप इस काल में स्वदेश संगठन की लहर सी दौड़ गयी।

श्री राधा चरण गोस्वामी ने अपने नाटक अमर सिंह राठौर के माध्यम से देश प्रेम को आमजन तक पहुँचाया।

जय भारत, जय भारत, जय भारत कहुरे।

भारत की भक्ति करो भारत में रहुरे रहे।।

भारत सम और देश त्रिभुवन में नाही।

सकल देश सभ्य भये जाकी परछाई।।

धर्म, कर्म, धन, जन, बल भारत में राजै।

भारत की विजय मेरी, दशहुँ दिशा बाजै।।⁶

देवकी नन्दन त्रिपाठी 'भारत हरण' में नारद जी के गीत के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की लौ को बढ़ाते हैं-

भारत के बाम भारती बिराजैगी

कंचन मेघ झरैगा नित झर-झर, ज्ञान विवेक-बुद्धि जग भ्राजैगी प्रकृति प्रभाव कला-कौशल की नित नूतन चहूँ दिशि छवि छाजैगी।⁷

प्रेमघन ने भी भारतेन्दु के रास्ते पर चलते हुए अपनी कृतज्ञता तथा भक्ति का प्रदर्शन किया। उन्हें भारत-भूमि से बढ़कर संसार में कोई अन्य स्थान सुंदर एवं सुख कर प्रतीत नहीं होता। भारत सौभाग्य में उन्होंने अपने मातृत्व प्रेम को जनता के सामने रखा ताकि जनता में चेतना की जागृति पैदा की जा सके-

मेरी यह जन्मभूमि प्रिय न ओर यासी।⁸

प्रेमघन के साहित्य में अपनी राष्ट्रीय सूझ-बूझ से निरंतर आगे बढ़ते गये साथ ही अन्य सभी नाटककारों ने इस सिलसिले को बढ़ाया। शरत्कुमार मुखोपाध्याय और राधा-कृष्णदास भी अपने नाटकों में मातृभूमि के प्रति अपनी प्रगाढ़ भक्ति प्रकट की है। रानी पद्मावती में राजा रत्नसेन के कथन में राष्ट्रीय भावों की मार्मिक आभिव्यंजना हुयी है- 'यदि यह पामर शरीर अपनी मातृभूमि के कुछ भी काम आवे तो इससे बढ़कर और पुण्य का क्या फल है?'⁹

डॉ० गोपीनाथ तिवारी का मानना है- जिन नाटककारों ने भी देश-प्रेम पर लेखनी दौड़ाई है, उन्होंने प्राचीन भारत का गुण अवश्य गया है।¹⁰

तात्कालीन नाटककार भारतीय जनता को अतीत के सुनहरे इतिहास का हवाला देकर वर्तमान समय में राष्ट्र के प्रति चेतना को जागृत करना चाहते थे। प्रताप नारायण मिश्र वर्तमान की तुलना अतीत से कर देशोद्धार की प्रेरणा 'भारत दुर्दशा रूपक मे देते नजर आये- 'कहाँ वह सार्वभौम राज्य? कहा यह दुर्दशा? कहाँ एक दिन यह था कि इन्ही पूज्यवाद प्रातः स्मरणीय को भूमण्डल के मनुष्य अपना शिरोमुकुट समझते थे और हाय।'¹¹

बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन ने अतीत का गौरवगान करते हुए अपने नाटक 'भारत सौभाग्य' में सजीव चित्रण किया है-

तजत होत सोच तुम भारत के वासी
भारत दूरभाग भारत के वासी
भारत में विपत्ति छोर रही है छटासी
छायो तम तिमिर सहज जो निसा अमासी
जैमिनी, गौतम, कणाद, व्यास ऋषि सरस उठासी
भरत, बाल्मीकि, कपिल शंकर सन्यासी।¹²

इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए राधाकृष्ण दास 'महाराणा प्रताप' में सूत्रधार से कहलवाते हैं- अहा संसार कैसा परिवर्तनशील है। क्षण-क्षण इसका रूप बदलता रहता है। क्या वही भारत है जिसमें एक सयम लोग आकाश मार्ग में विमानों पर विचरण करते थे। तप-बल से ऋषिगण जिधर जा निकलते थे। प्रकाश हो जाता था। विद्या, कला कौशल प्राणिमात्र में शोभा पाती थी। अवश्य अब से सब बातें दूर हो गयी। अब यह भारत वह भारत नहीं है। अब उसमें कोई शोभा ही नहीं नही ऐसा कदापि

नहीं। यह भारत वहीं है, इसमें सब कुछ हैं परन्तु काल के प्रभाव से रूपान्तर अवश्य हो गया है किन्तु वहीं भूमि वहीं आकाश वहीं मनुष्य वहीं पंक्षी सब वहीं है।

भारतेन्दु युगीन नाटककारों ने स्वर्णमय अतीत के साथ-साथ वर्तमान दुर्दशा का भी सजीव चित्रण किया है। गोपालराम गहमरी ने अपने नाटक 'देशदशा' में तत्कालीन परिवेश व्याप्त भ्रष्टाचार का मुखड़ा बनाकर जनता के बीच रखा।

"लीजिए देशदशा समर्पित है। अंगीकार कीजिए। इसकी एक-एक पंक्ति में दुःख की श्रृंखला भरी पड़ी है इससे आपका मन तो अवश्य दुखेगा, परन्तु बिना दुखाए रहा नहीं जाता।"

भारत सौ पराधी हाय,
भारत सों दीन दुःखत रोवत बिलखाय
भारत को वेगि दास भाव से छुड़ाओं
जय भारत, जय भारत, जय भारत गाओं।।¹⁴

राधा चरण गोस्वामी ने पराधीनता से देश की दुर्दशा का वर्णन 'अमर सिंह राठौर' में किया है। साथ ही अकाल, महंगाई और निर्धनता ने देश की कमर तोड़ दी थी। प्रेमघन ने इसे पंक्तियों में बाँधा-

भागो भागो अब काल पड़ा है भारी
भारत पे घेरी घटा विपत की कारी"¹⁵

भारतेन्दु युगीन नाटकों में राष्ट्रीयता के अनेक भाव-देशभक्ति, अतीत का गौरवगान वर्तमान के प्रति क्षोभ तत्कालीन भ्रष्ट शासन-प्रबंध से असंतोष, अपनी भाषा, संस्कृति तथा धर्म के प्रति अगाध निष्ठा तथा अनेक राष्ट्र निर्माणात्मक भावों का नवनिर्माण किया गया। इस युग के सभी नाटककार अपने युग के प्रति सजग दिखायी प्रतीत हुए। उन्होंने भारत का अधः पतन अपनी आँखों से देखा था। चारों ओर रूढ़िग्रस्त मानसिकता पाश्चात्य सभ्यता से उत्पन्न दूषित प्रभाव, भ्रष्ट शासननीति, खस्ता आर्थिक अवस्था आदि ने देश की जनता को खोखला कर रखा था। फलस्वरूप युगीन नाटकारों ने राष्ट्रीय चेतना को जन-जन के हृदय में जगाने का प्रयास किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. किशोरी लाल गोस्वामी: नाट्य संभव, प्रस्तावना पृष्ठ संख्या 2
2. लक्ष्मी सागर वाष्णेय: भारतेन्दु युगीन हिंदी नाटक (संपादन) डॉ. नगेन्द्र: सेठ गोविन्ददास अभिनंदन ग्रंथ पृष्ठ संख्या 300
3. पं. अंबिकादत्त व्यास: 'गो-संकट' नाटक (1882) की प्रस्तावना से पृष्ठ संख्या 9
4. प्रताप नारायण मिश्र: कली कौतुक रूपक।
5. डॉ. लक्ष्मी सागर वाष्णेय: भारतेन्दु युगीन हिंदी नाटक (संपादन) डॉ० लक्ष्मीसागर वाष्णेय का लेख पृष्ठ संख्या 293
6. राधा चरण गोस्वामी: अमर सिंह राठौर पृष्ठ संख्या 1
7. देवकी नंदन त्रिपाठी: भारत हरण पृष्ठ संख्या 30

-
8. प्रेमघनः भारत सौभाग्य पृष्ठ संख्या 7
 9. राधाकृष्णदासः महारानी पद्मावती पृष्ठ संख्या 5
 10. डॉ. गोपी नाथ तथा तिवारीः भारतेन्दु कालीन नाटक (संपादन) पृष्ठ संख्या 364
 11. राधा कृष्ण दास प्रताप सिंह पृष्ठ संख्या 1
 12. प्रेमघनः भारत सौभाग्य पृष्ठ संख्या 6
 13. राधा कृष्णदास - महाराणा प्रताप पृष्ठ संख्या 1-2
 14. गोपालराम गहमरीः देशदशा (समर्पण सं.) पृष्ठ संख्या 9
 15. राधा चरण गोस्वामीः अमरसिंह राठौर अंक-1 दृश्य-1 पृष्ठ संख्या 1